इस संदर्भ में मन्दिरों के कर्मकाण्ड का दृष्टान्त दिया जा सकता है। सामान्य रूप से ये किसी लौकिक-लाभ के लिए किए जाते हैं। इस श्लोक के अनुसार ऐसा करना सात्त्विक नहीं है। मनुष्य कर्तव्य समझ कर मन्दिर जाय, श्रीभगवान् की वन्दना करे और पुष्प-नैवेद्य आदि का अर्पण करे। दुर्भाग्यवश, प्रायः सब यही समझते हैं कि श्रीभगवान् की निष्काम पूजा के लिए मन्दिर जाना व्यर्थ है। परन्तु अर्थ-सिद्धि के लिए उपासना करना शास्त्र में नहीं है; अतः निष्कामभाव से भगवत्-विग्रह की वन्दना करने के लिए ही मन्दिर जाना चाहिए। ऐसा करने वाला सत्त्वगुण में आरूढ़ हो जायगा। अतएव सभ्य समझे जाने वाले मनुष्य का कर्तव्य है कि वह शास्त्र-विधान का पालन और श्रीभगवान् का वन्दन करे।

**अभिसन्धाय तु फलं दम्भार्थमपि चैव यत्।**
**इज्यते भरतश्रेष्ठ तं यज्ञं विद्धि राजसम्।।१२।।**

**अभिसन्धाय**=चाहते हुए; **तु**=परन्तु; **फलम्**=फल को; **दम्भ**=दम्भ (अवश); **अर्थम्**=लौकिक लाभ के लिए; **अपि**=भी; **च**=तथा; **एव**=निःसन्देह; **यत्**=जो; **इज्यते**=किया जाता है; **भरतश्रेष्ठ**=हे अर्जुन; **तम्**=उस; **यज्ञम्**=यज्ञ को; **विद्धि**=जान; **राजसम्**=राजस।

### अनुवाद

परन्तु हे अर्जुन ! जो यज्ञ किसी लौकिक उद्देश्य से अथवा गर्वपूर्वक दम्भाचरण के लिए किया जाता है, उसको तू **राजस** जान।।१२।।

### तात्पर्य

कभी-कभी यज्ञ आदि कर्म स्वर्ग-प्राप्ति अथवा किसी लौकिक-लाभ के लिए किए जाते हैं। ऐसे यज्ञकर्म राजस हैं।

**विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम्।**
**श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते।।१३।।**

**विधिहीनम्**=शास्त्र-विधि से रहित; **असृष्ट अन्नम्**=प्रसादवितरण के बिना; **मन्त्रहीनम्**=वैदिक मन्त्रों से रहित; **अदक्षिणम्**=दक्षिणा के बिना; **श्रद्धाविरहितम्**=श्रद्धारहित; **यज्ञम्**=यज्ञ को; **तामसम्**=तामस; **परिचक्षते**=कहते हैं।

### अनुवाद

और जो शास्त्रविधि के विरुद्ध, प्रसाद-वितरण से रहित, वैदिकमन्त्रों और दक्षिणा के बिना किया जाय, उस श्रद्धाशून्य यज्ञ को तामस कहते हैं।।१३।।

### तात्पर्य

तामसी श्रद्धा वस्तुतः अश्रद्धा ही है। कभी-कभी लोग धन के लिए यज्ञों द्वारा देवताओं का यजन करते हैं और फिर उस धन को शास्त्र की उपेक्षापूर्वक मनोरंजन करने में व्यय करते हैं। यह धर्म का दम्भपूर्ण आचरण है; अतः ऐसे यज्ञ तामस कहे गए हैं। इनसे मानवसमाज को कोई लाभ नहीं होता; केवल आसुरीभाव ही बढ़ता है।